इस्लाम

सफलता का एकमात्र रास्ता

लेखक
मौलाना सय्यद हामिद अली
अनुवादक
गुलज़ार सहराई

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, निहायत रहमवाला है।"

इस्लाम का सन्देश

यह विशाल ब्रह्माण्ड— जिसमें दूर, बहुत दूर, पाए जानेवाले सितारों की रौशनी ज़मीन तक पहुँचने में करोड़ों वर्ष लगते हैं (जबकि रौशनी की रफ़्तार एक सेकण्ड में तीन लाख किलोमीटर है)– अपने आप नहीं बन गया है और कोई चीज़ भी अपने आप नहीं बन जाती उसे एक सत्ता ने बनाया है और वह अल्लाह (परमेश्वर) है!

इस सृष्टि में जो अनुशासन पाया जाता है, उसका उदाहरण नहीं मिल सकता। इसके एक कण से लेकर बड़े-बड़े सितारों तक हर चीज़ अनुशासन और क़ानून में जकड़ी हुई है। यही नहीं, सृष्टि की हर चीज़ में हमें अद्वितीय तत्वदर्शिता और योजना-बद्धता दिखाई पड़ती है। यह इस बात का प्रमाण है कि इस सृष्टि का एक शासक है जो तत्वदर्शिता और योजना-बद्ध तरीक़े से इसकी व्यवस्था चला रहा है, और वह निश्चय ही सर्वज्ञ एवं तत्वदर्शी खुदा ही है। वास्तविकता यह है कि यह

सृष्टि न तो ईश्वर-विहीन है और न इसके बहुत-से खुदा हैं। एक ही ख़ुदा इस सृष्टि का रचयिता, स्वामी, प्रबन्धक और शासक है तथा ब्रह्माण्ड के कण-कण में उसका क़ानून लागू है।

यही खुदा हम सब इनसानों का भी रचयिता, स्वामी और शासक है। वह हमारा पालनहार और हमपर अपनी नेमतों की बारिश क़रनेवाला भी है। हमारे शरीर, हमारे अंग, हमारी प्रतिभाएँ तथा शक्तियाँ और ज़मीन के अन्दर और बाहर समुद्र के तलों और वातावरण तथा ग्रहों में पाई जानेवाली तमाम नेमतें (अनुकम्पाएँ) उसी की पैदा और प्रदान की हुई हैं। वही सूरज निकालता, हवाएँ चलाता और पानी बरसाता है। वह पानी न बरसाए तो हम एक बूँद पानी न पा सकें और चाहे तो इतना पानी बरसाए कि पूरे-पूरे इलाक़े पानी में डूब जाएँ और जीना हमारे लिए अत्यन्त कठिन हो जाए। हम पानी की एक-एक बूँद, अनाज के एक-एक दाने, ज़िन्दगी के हर सामान और अपनी हर साँस के लिए उसके मुहताज हैं। जिस व्यक्ति या क़ौम को जो कुछ मिलता है, उसके देने से मिलता है और उसके छीन लेने से छिन जाता है।

सच तो यह है कि अल्लाह ने इनसान की हर आवश्यकता की पूर्ति का प्रबन्ध किया है, लेकिन

उसकी सबसे बड़ी ज़रूरत यह है कि उसे जीवन बिताने का सही तरीक़ा मालूम हो ताकि वह असफलता से बच सके और सफलता प्राप्त कर सके। अल्लाह ने जो अनगिनत नेमतें उसे दी हैं, उसके उपयोग के सही ढंग से वाक़िफ़ हो। उसके शरीर, अंगों और क्षमताओं की सही उपयोगिता क्या है, उससे अवगत हो, अपने जीवन के उद्देश्य से आगाह हो। उसे एक ऐसी जीवन-प्रणाली चाहिए जिसमें हर क़ौम, हर वर्ग, हर बिरादरी, हर ज़ाति और हर व्यक्ति के लिए इनसाफ़ पाने और तरक़्क़ी करने के समान अवसर पाए जाते हों तथा सबकी ज़ान, माल और मान-मर्यादा सुरक्षित हो। जो सब इनसानों के जीवन की तमाम समस्याओं का सही और व्यापक एवं पूर्ण समाधान हो। जिसमें इनसानों को ख़ुदा से डरनेवाला और चरित्रवान बनाने की प्रशिक्षण व्यवस्था हो। जिसमें धन-दौलत और तमाम संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण हो। जो इनसानों को ख़ुदा से डरनेवाला बनाता हो और उत्तरदायित्वपूर्ण शासन-व्यवस्था दे सकता हो। जो अन्तर्राष्ट्रीय विवादों तक को सुलझाने के लिए सिद्धान्त उपलब्ध करा सके। इसी के साथ उस दीन (धर्म) को अपना लेने से ख़ुदा राज़ी हो जो सब इनसानों का रचयिता, स्वामी, शासक, पालनहार और उपकारकर्ता है और जिसके हाथ में हमारी दुनिया और आख़िरत (परलोक) है।

यह इनसान की सबसे बड़ी ज़रूरत है। यह ज़रूरत पूरी न हो तो सारी भौतिक सफलताओं के बावजूद इनसान को हर प्रकार की तबाही और बर्बादी का सामना करना पड़ेगा— जैसा कि इस समय करना पड़ रहा है— इनसानों का बनाया हुआ कोई संविधान और कोई व्यवस्था इस ज़रूरत को पूरी नहीं कर सकी। संसार में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती जो जीवन की तमाम समस्याओं का समाधान करती हो। साम्यवाद (Communism) केवल पेट की समस्या का हल है, और वह भी नाकाम हल! लोकतन्त्र एक राजनीतिक ढाँचा है और वह भी एक नाकाम राजनीतिक ढाँचा, और बस! पूरी ज़िन्दगी की कोई व्यवस्था नहीं। कोई भी व्यवस्था और कोई भी क़ानून सब इनसानों की समस्याओं की बात नहीं करता। जातीय क़ानून अपनी-अपनी जाति के लिए हैं और वे भी उनकी समस्याओं को हल करने में नाकाम हैं। साम्यवाद को केवल मज़दूरों की चिन्ता है और वह भी उनकी समस्याओं का समाधान करने में नाकाम है।

जिस ख़ुदा ने इनसान की तमाम ज़रूरतों की पूर्ति का प्रबन्ध किया है, उसी ने इनसान की इस सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति का प्रबन्ध भी किया है। वह हर क़ौम और हर दौर में अपने पैग़म्बर, जो

बेहतरीन इनसान थे, इनसानों के मार्गदर्शन के लिए भेजता रहा और उनपर अपना दीन अर्थात् जीवन-व्यवस्था अवतरित करता रहा। इन सब पैग़म्बरों ने इनसानों को एक ही बात की ओर बुलाया, और वह यह कि वे केवल अल्लाह की उपासना एवं आज्ञापालन करें और पूरी ज़िन्दगी में उसके व्यापक, पूर्ण और न्यायसंगत धर्म का पालन करें। उसके सिवा किसी दीन (धर्म) और जीवन-प्रणाली का अनुपालन न करें। उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह के दीन की पूरी और निष्ठापूर्ण पैरवी करके ही वे संसार की वास्तविक सफलता और आख़िरत (परलोक) की शाश्वत सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

दुष्चरित्र, अत्याचारी और बिगाड़ फैलानेवाले इनसानों ने अल्लाह के इन पैग़म्बरों का जमकर विरोध किया, लेकिन जब उनके विरोध के बावजूद अल्लाह का दीन दुनिया में फैला और फला-फूला तो उन्होंने इन नबियों के दुनिया से चले जाने के बाद अल्लाह के दीन में फेर-बदल करके उसे बिगाड़कर रख दिया। यह उसी बिगाड़ का परिणाम है कि संसार के धर्म परस्पर विरोधी शिक्षाओं, ऊल-जलूल प्रसंगों तथा कहानियों से भरे पड़े हैं और धर्म के नाम पर अत्याचार, बिगाड़ और चरित्रहीनता का बाज़ार गर्म है। इस सबके बावजूद

अल्लाह तआला इनसानों के सुधार के लिए अपने सन्देष्टा बराबर भेजता रहा। ये पैग़म्बर प्रायः एक ही क़ौम के लिए होते थे।

अन्त में सर्वोच्च अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* को अपना रसूल (सन्देष्टा) बनाया। हालाँकि आप *(सल्ल.)* अरब के एक शहर मक्का में पैदा हुए— और आप एक ही जगह पैदा हो सकते थे— लेकिन अल्लाह ने आपको क़ियामत तक सारे इनसानों के लिए मार्ग-दर्शक बनाया और इन्सानी फेर-बदल से मुक्त करके वही दीन अन्तिम और पूर्ण रूप में आप *(सल्ल.)* पर अवतरित किया, जो संसार के सारे पैग़म्बर लाए थे। यह दीन रहती दुनिया तक सारे इनसानों के लिए है।

अल्लाह का यह दीन 'इस्लाम' अपने वास्तविक रूप में क़ुरआन मजीद और हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* की हदीसों में सुरक्षित है। जबकि अन्य तमाम धर्मों की पुस्तकों में फेर-बदल हो चुके हैं। हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)* के जीवन का सारा विवरण प्रामाणिक इतिहास की रौशनी में आज भी संसार के सामने उसी प्रकार है, जिस प्रकार आप *(सल्ल.)* के जीवन में था। और आपका यह चरित्र जीवन के सारे पहलुओं में पूरी मानवजाति के लिए आदर्श और अनुकरणीय है। जबकि दुनिया के किसी पेशवा के जीवन-चरित्र का विवरण इस प्रकार सुरक्षित नहीं है। फिर आप *(सल्ल.)* ने जिस तरह बिगड़े

हुए लोगों को सुधारा और उन्हें प्रशिक्षित किया, जो आदर्श समाज बनाया, जो आदर्श स्टेट क़ायम की और जिस प्रकार दुनिया को बेमिसाल इनक़िलाब लाए, उस सबका प्रामाणिक विवरण मौजूद है, और यह आदर्श समाज, आदर्श क्रान्ति और आदर्श राज्य रहती दुनिया तक इनसानों के लिए नमूने की हैसियत रखते हैं। इतिहास में किसी अन्य समाज, इनक़िलाब और राज्य की इस प्रकार की विस्तृत जानकारी मौजूद नहीं है।

यह हम इनसानों पर अल्लाह का कितना बड़ा एहसान है कि हमारे पास अल्लाह का वह दीन— इस्लाम— मौजूद है जो धारणाओं, विचारों, इबादतों और नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों अर्थात ज़िन्दगी के तमाम मामलों में हमारा सही मार्गदर्शन करता है, जो हमारी और हमारे देश की समस्याओं के साथ-साथ पूरी मानवजाति की जीवन-समस्याओं को— जिन्हें हल करने में साम्यवाद, लोकतन्त्र और दुनिया के तमाम क़ानून नाकाम हो चुके हैं— अत्यन्त अच्छे व भले तरीक़े से हल करता है। साथ ही हज़रत मुहम्मद *(सल्ल॰)* के जीवन का आदर्श, प्रतिष्ठित सहाबा *(रज़ि॰)* के आदर्श समाज का नमूना, नबी *(सल्ल॰)* के समय के आदर्श राज्य का नमूना और ख़िलाफ़ते-राशिदा के समय के आदर्श राज्य का नमूना

भी हमारे सामने मौज़ूद है। हम इन सबकी रौशनी में अपना प्रशिक्षण, अपनी क़ौम के सुधार एवं निर्माण और देश तथा मानवजाति की तमाम समस्याओं को हल करने का काम भली प्रकार कर सकते हैं। साथ ही हम इस दीन को अपनाते हुए आज के ज्ञानपरक एवं बौद्धिक समय में तेज़ी के साथ आगे बढ़ सकते हैं क्योंकि यह दीन ज्ञान एवं बुद्धि को बुनियादी महत्व देता है और ज्ञान एवं विवेक के विरुद्ध कोई बात नहीं कहता।

लेकिन मामला केवल अपनी-अपनी क़ौम और मानवजाति की सांसारिक सफलता का नहीं है, बल्कि अस्ल मामला अल्लाह की प्रसन्नता और आख़िरत की शाश्वत सफलता की प्राप्ति और हमेशा के अज़ाब से मुक्ति का है। हम सबको एक दिन मरना है और मर कर उसी ख़ुदा के पास जाना है जिसने हमें संसार में भेजा था। सब इनसान एक न एक दिन मर जाएँगे और एक दिन यह सृष्टि— जैसा कि वैज्ञानिक भी कहते हैं— विनष्ट हो जाएगी। इसके बाद अल्लाह सृष्टि को फिर से बनाएगा, यह सृष्टि शाश्वत होगी। वह सब इनसानों को दोबारा ज़िन्दा करेगा और उनकी यह ज़िन्दगी शाश्वत होगी। फिर सृष्टि के शासक, सर्वोच्च अल्लाह, की अदालत क़ायम होगी। यह इसलिए कि

ज़ालिमों और बुरे लोगों को उनके ज़ुल्म और बुराई की भरपूर सज़ा मिले— जो दुनिया में नहीं मिलती और न ही मिल सकती है— और पीड़ितों को इनसाफ़ मिले और भले लोगों को उनकी नेकी का भरपूर इनाम मिले– और यह भी दुनिया में नहीं मिलता और न ही मिल सकता है। फिर सब इनसान अल्लाह की अदालत में हाज़िर किए जाएँगे। इनमें से कोई भी बचकर न जा सकेगा। इनसानों की ज़िन्दगी का पूरा रिकार्ड अल्लाह की अदालत में पेश होगा। वे अपने कानों से अपनी कही हुई बातों को सुनेंगे, अपनी आँखों से अपने सब किए हुए कामों को देखेंगे और उनकी पूरी ज़िन्दगी उनके और अल्लाह के सामने होगी, जिसका वे इनकार न कर सकेंगे। ज़मीन, जिसपर उन्होंने ज़िन्दगी बिताई थी, उनके क्रिया-कलापों को बयान करेगी। आस-पास के इनसान गवाही देंगे और इन सबसे बढ़कर यह कि इनसान का अपना बदन, जिसपर इनसान की कथनी और करनी का प्रभाव पड़ा था, बताएगा कि इनसान ने ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारी थी। अदालत की कुर्सी पर स्वयं सर्वोच्च अल्लाह विराजमान होगा। उसकी नज़र से इनसान का कोई अमल, कोई क़ौल (कथन) और मन-मस्तिष्क का कोई इरादा छिपा नहीं रहेगा। वहाँ झूठे गवाह उपलब्ध न होंगे, न मुक़द्दमे की पैरवी के लिए कोई वकील होगा और न हिमायत के लिए दूर-पास का

कोई सम्बन्धी या मित्र। सबको अपनी-अपनी पड़ी होगी। बस ख़ुदा होगा और इनसान। इनसान को अपने जीवन के तमाम कामों का ख़ुदा को हिसाब देना होगा। एक-एक बात और अमल का हिसाब!

अदालत में अगर यह बात सिद्ध हो गई कि इनसान अल्लाह का और सिर्फ़ अल्लाह का बन्दा था, अपनी पूरी ज़िन्दगी में उसके दीन (धर्म) और आदेशों का अनुपालक था, नेकियों को अपनानेवाला और बुराइयों से बचनेवाला था, इनसानों के अधिकार देनेवाला और उनके साथ न्याय एवं सद्व्यवहार करनेवाला था, अत्याचार, बिगाड़, असत्य और बुराइयों को मिटानेवाला तथा हक़, इनसाफ़, नेकियों और इनसानियत को क़ायम रखनेवाला था, और यह सब वह अल्लाह की प्रसन्नता चाहने और आख़िरत की शाश्वत सफलता पाने के लिए करता रहा था तो अल्लाह की अदालत से उसके लिए जन्नत का फ़ैसला होगा। वह शाश्वत जीवन में असीमित और हमेशा रहनेवाली नेमतें पाएगा। वहाँ उसे वह सब कुछ मिलेगा जो वह चाहेगा और जो वह सोच सकेगा। इसके अलावा उसे वे नेमतें भी मिलेंगी जो न किसी कान ने सुनीं, न किसी आँख ने देखीं और न किसी दिल में उनका ख़याल आया होगा। अल्लाह उससे हमेशा के लिए राज़ी हो जाएगा। उससे बात

करेगा, उसे अपना सामीप्य प्रदान करेगा और उसे अपने दीदार (दर्शन) के द्वारा उसकी मनोकामना पूरी करेगा। ये हैं शाश्वत जन्नत की— जिसकी लम्बाई–चौड़ाई इस पूरी सृष्टि के बराबर है— शाश्वत और कभी न ख़त्म होनेवाली नेमतें!

इसके विपरीत अगर अल्लाह की अदालत में यह सिद्ध हो गया कि इनसान अल्लाह का नाशुक्रा था, उसने अल्लाह के सिवा दूसरी हस्तियों की उपासना एवं आज्ञापालन किया था, अल्लाह के दीन और उसके आदेशों की जगह अपनी इच्छाओं और अपने जैसे इनसानों के विचारों, रंग-ढंग और क़ानून की पैरवी की थी, नेकियों की जगह बुराइयों और अल्लाह की नाफ़रमानी का रास्ता अपनाया था, और इनसानों पर ज़ुल्मो-सितम ढाया और ज़मीन में चरित्रहीनता और बिगाड़ को बढ़ावा दिया था तो अल्लाह की अदालत से उसके लिए जहन्नम के अज़ाब का आदेश होगा। जहन्नम में अनगिनत तरह के हौलनाक अज़ाब होंगे। भयंकर आग दोज़ख़ियों को ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, हर तरफ़ से ढाँप लेगी। यह दुनिया की आग से 70 गुना ज़्यादा तेज़ होगी, मगर इनसान उसमें जलकर मरेगा नहीं। खाल जलेगी बदल जाएगी, गोश्त जलेगा बदल जाएगा, हड्डी जलेगी बदल जाएगी। इनसान बस

जलता रहेगा, जलता रहेगा। प्यास लगने पर उसे खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा जो होंठों, गले और आँतों को उधेड़ देगा। यही उबलता पानी उसके बदन पर उंडेल दिया जाएगा। खाने में इतना ज़हरीला और काँटेदार खाना मिलेगा जिसकी इनसान कल्पना भी नहीं कर सकता। और इसी तरह के दूसरे बहुत से अज़ाब! ख़ुदा की नाफ़रमानियों, बुराइयों, अनैतिकताओं और अत्याचार एवं बिगाड़ का भरपूर बदला।

हक़ीक़त यह है कि सांसारिक सफलता के साथ और उससे बहुत ज़्यादा हमें आख़िरत की शाश्वत सफलता की प्राप्ति और कभी ख़त्म न होनेवाले अज़ाब से मुक्ति की चिन्ता और कोशिश करनी है। और उसकी एक ही राह है, अल्लाह के दीन (इस्लाम) की पूरी ज़िन्दगी में निष्ठापूर्ण पैरवी! अल्लाह से दुआ है कि वह इस महान कार्य के लिए उठ खड़े होने का हमें सौभाग्य प्रदान करे! आमीन!

☆☆☆

कुछ अन्य हिन्दी पुस्तकें

अच्छे लोग	इरफ़ान ख़लीली
इस्लाम आप से क्या चाहता है?	मौलाना सय्यद हामिद अली
इस्लाम और मानवाधिकार	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी
इस्लाम और सामाजिक न्याय	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
इस्लाम एक नज़र में	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही
इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल-हई
इस्लाम की बुनियादी तालीमात (ख़ुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
इस्लाम में जनसेवा	मौलाना मलिक हबीबुल्लाह क़ासमी
इस्लाम में पाकी और सफ़ाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
इस्लाम में मानवाधिकार	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
इस्लामी तालीमात	मौलाना सुलैमान क़ासमी
आख़िरत के अज़ाब से ख़ानदान को बचाइए	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी
क़ुरआन की बातें-1,2 (बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी
क़ुरआन मजीद की शिक्षाएँ	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
चालीस हदीसें	मौलाना सय्यद हामिद अली
ज़बान की हिफ़ाज़त	बिन्तुल-इस्लाम

जीवनी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)*	मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
नबी करीम *(सल्ल.)* की दुआएँ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ
प्यारी माँ के नाम इस्लामी सन्देश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी
मुसलमान किसे कहते हैं?	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल-इस्लाम
सोचने की बातें	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी
सब्र और उसके फ़ायदे	बिन्तुल-इस्लाम
हीरे का जिगर	माइल ख़ैराबादी
हदीस प्रभा (सफ़ीन-ए-नजात)	मौलाना जलील अहसन नदवी

नोट : सम्पूर्ण पुस्तक सूची मुफ़्त मंगाएँ।

मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स

D-307, अबुल-फ़ज़्ल इंक्लेव, जामिआ नगर, नई दिल्ली-25

फ़ोन : 011-26971652, 26954341 फ़ैक्स : 011-26947858, 2695097

E-mail : mmipub@nda.vsnl.net.in website : www.mmipublishers.net